य एषु सुप्तेषु जागर्ति | वर्ष 63 | अंक 165 | पृष्ठ 22 | मूल्य 4.50 | **जयपुर, शुक्रवार, 02 जून, 2023** | ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी, संवत् 2080

राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गुजरात, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और दिल्ली से प्रकाशित

पत्रिका जनप्रहरी
स्वच्छ रहे राजनीति
janprahari.patrika.com

राजस्थान पत्रिका

पत्रिका लोकतंत्र का उत्सव

आप उतरें तो अच्छी हो राजनीति

गुलाब कोठारी

हमारे देश में प्रत्येक कर्म के साथ एक संस्कार जुड़ा रहता है, जो कर्म को प्रतिष्ठित करता है। इसी तरह लोकतंत्र के साथ भी जनमत संग्रह का संस्कार जुड़ा है। इसी से जनप्रतिनिधि का चुनाव होता है। हालांकि, चुनाव शब्द स्वयं 'हार-जीत' में बदल गया है। इसी कारण यहां अर्थ-अनर्थ शब्द ही व्यर्थ हो गए। 'जीतने वाले' भी निश्चित रूप से जनता को शर्मसार करने लगे हैं। चुनाव एक व्यापार जैसा हो गया है। वहीं राजनीतिक दल कॉरपोरेट हाउस बनते जा रहे हैं। इतना ही नहीं, चुनाव खर्च, निवेश का रूप लेता जा रहा है और प्रत्याशी शेयर होल्डर का रूप। इसीलिए सत्ता में आते ही कमाई पर जोर दिया जाता है। पांच साल में इतनी तरह की योजनाएं चल पड़ती हैं कि हर ऐसे शेयरधारक (विधायक-मंत्री) को अपना खर्च भी मिल जाता है, अगले चुनाव के लिए निवेश की राशि भी। यही कारण है कि बजट घोषणाओं की बड़ी राशि जनता तक पहुंच ही नहीं पाती। सारा विकास भी नए उधार पर आधारित रहता है। कहने को तो ये वे ही संभ्रांत व्यक्ति होते हैं जिनको लाखों लोग सिर पर बिठाते हैं। लेकिन मात्र पांच साल में इनकी शेर की खाल उघड़ जाती है। यही कारण है कि अमृत महोत्सव मनाने के लिए गरीबी रेखा से नीचे जीवन बिताने वाले (बीपीएल) काफी संख्या में बढ़ गए। राजनेता माफिया से जुड़ गए। राज करना आता नहीं, ज्ञानी होने की कोई शर्त भी नहीं होती। राज अफसर करता है, नेता धन बटोरता है।

दूसरा कीड़ा जिसने लोकतंत्र को खोखला कर दिया, वह है जातिवाद। वंशवाद-क्षेत्रवाद भी इसी की शाखाएं बनकर निकली हैं। हर बड़े दल को एक बड़ी जाति का आधार टिकाए चल रहा है। उस दल के लिए उसकी जाति, देश और कानून से भी बड़ी है। सच तो यह है कि न कोई वर्ण सिद्धान्त के तात्विक स्वरूप को जानता है, फिर भी जाति का कार्ड धड़ल्ले से चल रहा है। हर जाति में कोई भी वर्ण पैदा हो सकता है। जाति कर्म से और वर्ण जन्म से मिलता है। विभिन्न प्रकार के आरक्षणों के लाभों पर अध्ययन किया जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि लाभान्वित कौन हुआ और कौन वंचित रह गया? आगे चलकर यही वंशवाद का जनक बन गया। लोकतंत्र का जो रूप आज उभरकर आया है, उस पर शोध किया जाना चाहिए। अशिक्षा का शत्रु लोकतंत्र से चिपक सा गया। कानून ने विरासत का रूप ले लिया। देशहित पीछे छूट गया। देश कई टुकड़ों में बंट गया। एकता और अखण्डता का नारा धूल में मिल गया। जैसे-जैसे विकास हुआ वैसे-वैसे ही गरीब बढ़ते चले गए। सौहार्द भी कहीं चला गया।

हर पांच साल बाद हम अपना जनप्रतिनिधि चुनते हैं। युग बदलता है, संस्कृति बदलती है, नए मतदाता जुड़ते हैं। ऐसा भी होता है कि हम ही प्रतिनिधि चुनते हैं, हम ही धकेलकर बाहर भी कर देते हैं। किसी को शर्म तक नहीं आती। इसका कारण दलों की दृष्टि का संकुचन भी है। जो कमाऊपूत है उसे ही टिकट देते हैं, अपराधी का नंबर पहले। तब कैसा विकास, कैसा लोकतंत्र!

> आज पैंसठ प्रतिशत युवा वर्ग पैंतीस वर्ष से कम आयु का है। साथ ही शिक्षित और तकनीकी रूप से सक्षम है। भविष्य का भारत इन्हें ही बनाना है, इनको ही जीना है।

राजस्थान पत्रिका लोकतंत्र का चौथा पाया नहीं है, प्रहरी है। 'य एषु सुप्तेषु जागर्ति'- सोते हुओं में जागता रहने वाला। अपने इसी दायित्वबोध के कारण पत्रिका ने वर्ष 2018 में चार अप्रेल को 'चेंजमेकर' अभियान शुरू किया था। मकसद एक ही था कि सामूहिक भागीदारी से सीधे स्वतंत्र प्रत्याशियों की चयन प्रक्रिया बने। इस प्रक्रिया का लक्ष्य पार्टी नहीं बल्कि प्रत्याशी का व्यक्तित्व बनाया गया। ताकि कई बेड़ियां टूट सकें, शिक्षित-ईमानदार व निष्ठावान व्यक्ति का ही सीधा चयन हो सके, और मकसद यह भी रहा कि बदलाव का यह संकल्प यदि पार्टी से जुड़ जाए तो सोने में सुहागा। सरकारों के भ्रष्ट और धृष्ट व्यवहार से मुक्ति मिल सकती है। जब अंगूठा छाप नेता मंत्री बन जाए तब सरकार अधिकारी ही चलाते हैं। जितने विभाग, उतनी कमाई। चुनाव खर्च वसूल करना पहला लक्ष्य और अगले चुनाव की व्यवस्था। चारों ओर माफियाराज।

बहुत हो गया। चिंता यह है कि आज तो युवा, राजनीति में प्रवेश से पहले भ्रष्ट होने पर उतारू हो चला। कॉलेज में ही विभिन्न दलों का सदस्य बनकर, उनके चोले में ही छात्रसंघों के चुनाव लड़ता है। तब देश का चिन्तन कैसे विकसित होगा? जबकि आज पैंसठ प्रतिशत युवा वर्ग पैंतीस वर्ष से कम आयु का है। साथ ही शिक्षित और तकनीकी रूप से सक्षम है। भविष्य का भारत इन्हें ही बनाना है, इनको ही जीना है। आज तो जनप्रतिनिधि, जनता की शक्ति से जनता को ही आहत करके गौरवान्वित होते दिखते हैं। युवा शक्ति ही इन 'आसुरी शक्तियों' से लोकतंत्र को मुक्त कराएगी। इसके लिए चुप्पी तोड़नी है। बदलाव के दृढ़ संकल्प के साथ। पुराने अनुभव काम आने चाहिए। इसीलिए पत्रिका आगामी चुनावों में भी अपनी सक्रिय भूमिका के साथ खड़ा है। नए लोगों का चुनाव हो। ऐसा चुनाव जिसमें जनभागीदारी हो। साथ ही उसे प्रशिक्षण भी मिले। जनता द्वारा ही अपने उम्मीदवार का चयन किया जाना लोकतंत्र का बड़ा उत्सव है। इसमें नए युग की दृष्टि पहली आवश्यकता है। इसीलिए जनप्रहरी अभियान में हमारा नारा है-'आप उतरें तो राजनीति अच्छी हो।' सही मायने में हमारा जनप्रहरी ही नए बदलाव का हीरो होगा।

बदलाव कोई साधारण कार्य नहीं है। इस पर भी निर्भर करता है कि किसको बदलना है। सृष्टि में असुर तीन गुणा होते हैं, अच्छे लोगों से। इनसे निपटने के लिए दृढ़ संकल्प और मर मिटने की शक्ति चाहिए। स्वर्ग में जाना है तो स्वयं को ही मरना पड़ता है। क्रान्ति के दूत ही अवतार कहलाते हैं। इतिहास साक्षी है नई पीढी अपनी नई आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं मार्ग निकालती है। विश्वभर में आज भी ऐसा ही हो रहा है। ऐसे में सवाल यह है कि भारतीय युवा मौन है। क्यों? क्या उसमें ऊर्जा का अभाव है? क्या वे नए अंग्रेजों का गुलाम ही रहना चाहते हैं? आज हम स्वतंत्र कहां हैं? जन्म से मृत्युपर्यन्त किसी न किसी योजना के नाम पर सरकारों पर ही आश्रित हैं। सरकारों ने युवाओं को भर्तियों से बाहर रखने का तरीका ढूंढ रखा है। जो पुराने हैं वे कुर्सी पर बने रहने के लिए कानून तक बना और बदल देते हैं। रास्ते निकाल लेते हैं। **शेष@पेज 00**

gulabkothari@epatrika.com

बड़ा मौका... अपने आप से सवाल करें, क्या हमें चुप रहना चाहिए?

आओ बनें जनप्रहरी

पत्रिका जनप्रहरी अभियान बदलाव के नायकों *के लिए एक ऐसा मंच है जो उन्हें राजनीति और समाज में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार कर सशक्त बनाएगा। अभियान तय प्रक्रिया से ऐसे व्यक्तियों को चुनकर प्रशिक्षण देगा, जो देश में सकारात्मक बदलाव लाना चाहते हैं। अभियान का ध्येय नागरिकों की सक्रिय भागीदारी से ऐसे नेतृत्व का निर्माण करना है जो स्वच्छ, समावेशी और प्रशिक्षित हो। पत्रिका के जनप्रहरी 2023 अभियान में राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पंजीकृत वोटर्स आवेदन कर सकते हैं। पत्रिका का जनप्रहरी अभियान 2018 से चले आ रहे चेंजमेकर्स अभियान का नया रूप है।*

क्या हम वाकई दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश कहलाने के हकदार हैं? सवाल थोड़ा मुश्किल में डालने वाला है। हम यह दावा करने से कभी नहीं थकते कि हम लोकतांत्रिक देशों का नेतृत्व करते हैं। अब इसके साथ ही सवाल ये भी खड़ा होता है कि क्या सबसे अधिक मतदाता होने के कारण ही हम अपने आपको सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश कह सकते हैं?

हम दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश जरूर हैं लेकिन चिंता की बात यह है कि चुनाव के समय यहां जातिवाद, वंशवाद, बाहुबल और धनबल का बोलबाला रहता आया है। संसद से लेकर विधानसभाओं की स्थिति यही है कि यहां आपराधिक छवि के नेताओं की संख्या चुनाव दर चुनाव बढ़ती जा रही है। ऐसे-ऐसे लोग संसद और विधानसभाओं में चुनाव जीतकर पहुंचने में सफल हो जाते हैं जिनके खिलाफ हत्या, बलात्कार और अपहरण के संगीन आरोप लग चुके हैं। और तो और जेलों में बंद रहकर भी नेता चुनाव जीत जाते हैं।

जिनके पास पैसा और ताकत वे बन रहे जनप्रतिनिधि...

आखिर में अपराधी छवि वाले नेताओं को जितवाते तो हम ही हैं। फिर राजनीति को हम खराब कैसे कह सकते हैं? सवाल ये कि राजनीति में पैसे वाले और अपराधियों का बोलबाला क्यों होता जा रहा है? शायद इसलिए कि अच्छे लोग राजनीति में आने से बचना चाहते हैं। उन्हें चिंता इस बात की है कि चुनाव में टिकट मिल भी गया तो जीतेंगे कैसे? जातिवाद के नाम पर वोट कैसे मांग पाएंगे? चुनाव में मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए पैसा कहां से जुटाएंगे?

शायद यही कारण हे कि अच्छे लोग राजनीति के बाहर रहना पसंद करते हैं और वे लोग जनप्रतिनिधि बन रहे हैं जिनके पास पैसा और ताकत है। ऐसे हालात के लिए हम सब दोषी हैं। हमें एक सवाल अपने आप से भी पूछना होगा कि क्या हम जो कर रहे हैं वो सही है? क्या हम सिर्फ तमाशा ही देखते रहेंगे या कुछ पहल भी करेंगे? हम खुद भले ही राजनीति में न जाएं लेकिन अच्छे लोगों को लाने में तो मदद कर ही सकते हैं। राजनीति से गंदगी साफ करने के हवन में हमें भी आहुति डालने आगे आना होगा। वर्ना वह दिन दूर नहीं जब विधायिकाओं में अपराधियों का बोलबाला नजर आएगा।

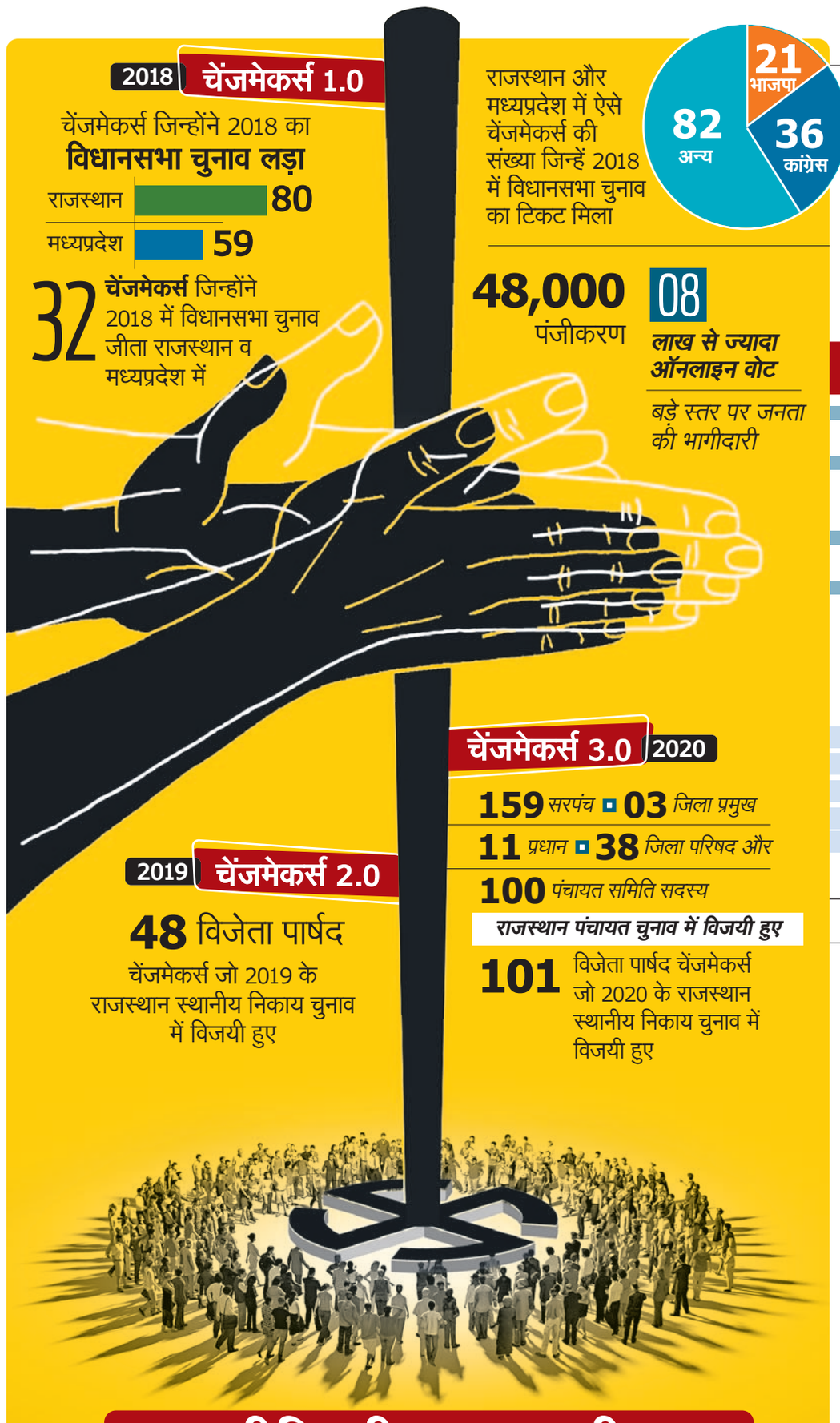

क्या अभियान का दायरा केवल राजनीति तक सीमित रहेगा?

जनप्रहरी बनने के लिए यह अनिवार्य नहीं है कि आवेदक चुनाव लड़ने का इच्छुक हो। वे अपने वार्ड/क्षेत्र, जिले, प्रदेश और देश के लिए ऐसे चेहरे हो सकते है जो किसी भी क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए कार्य करना चाहते हैं। इस बार जनप्रहरी की पहल चुनावी दौर तक ही सीमित नहीं रहेगी। बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व के एक मंच के रूप में अभियान को लगातार चलाया जाएगा।

हमारा उद्देश्य...

- **राजनीति** में आने वाले नए चेहरों के लिए मंच का निर्माण करना।
- **राजनीतिक और सामाजिक** परिवर्तन के नायकों के सामने प्रशिक्षण और जनाधार की कमी जैसे अवरोधों को दूर करना।
- **राजनीति** में घुसे अपराध, वंशवाद और बाहुबल को खत्म करना।
- **राजनीति** को एक ऐसे पेशे की तरह दर्शाना जिसमें कौशल और प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

अभियान के विभिन्न चरण...

1. अभियान में भाग लेने के लिए **पंजीकरण व आवेदन**
2. प्राप्त आवेदनों की **जांच और छंटनी**
3. जनप्रहरी का **चयन व नॉलेज पार्टनर द्वारा प्रशिक्षण**
4. जनप्रहरियों और अभियान सहयोगियों द्वारा अपने क्षेत्र में **टास्क और एक्टिविटी**

इस बार अभियान में क्या अलग है?

जनप्रहरी अभियान स्वच्छ छवि वाले जन-नायकों के लिए अपनी पहचान बनाने का मौका है। अभियान से जुड़कर जनप्रहरी महत्वपूर्ण नेटवर्क भी बना सकते है जिससे उनके प्रभाव का दायरा बढ़ सके। इस बार घोषित जनप्रहरियों के लिए प्रभावी लीडर बनने के आवश्यक कौशल में प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर भी रहेगा। जनप्रहरी सामाजिक और राजनैतिक ज्ञान, टीम निर्माण, फण्ड-रेजिंग, जन समर्थन जुटाना, एजेंडा सेटिंग, निर्वाचन क्षेत्र प्रबंधन, चुनाव प्रचार आदि जैसे कौशल पर विशेषज्ञों से प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

अभियान से कैसे जुड़ सकते हैं?

पत्रिका जनप्रहरी के आवेदक दो प्रकार से अभियान का हिस्सा बन सकते हैं- जनप्रहरी के रूप में अथवा अभियान सहयोगी के रूप में। पत्रिका के जनप्रहरी ऐसे चैंपियन होंगे जो जन-प्रतिनिधि के रूप में अपने क्षेत्र या राज्य के विकास में सक्रिय भूमिका निभाना चाहते है। अभियान सहयोगी ऐसे नागरिक होंगे जो सक्रिय रूप से राजनीति में शामिल होने के इच्छुक नहीं है, लेकिन जनप्रहरियों को अपने क्षेत्र में समर्थन प्रदान करना चाहते हैं।

अब तक का सफर...

भारत में अपराध और राजनीति की सांठ-गांठ बड़ी हकीकत है। इसके बावजूद इस समस्या का समाधान करने के लिए नागरिक आम तौर पर आगे नहीं आते हैं। पत्रिका ने राजनीति में आई बुराइयों के खात्मे के लिए साफ सुथरी छवि वाले नागरिकों को लाकर राजनीति को स्वच्छ करने का संकल्प लिया है। इसी संकल्प से उत्पन्न हुआ 'चेंजमेकर अभियान', अब ये **'पत्रिका जनप्रहरी अभियान'** के नाम से जाना जाएगा।

राजनीति की तल्ख हकीकत

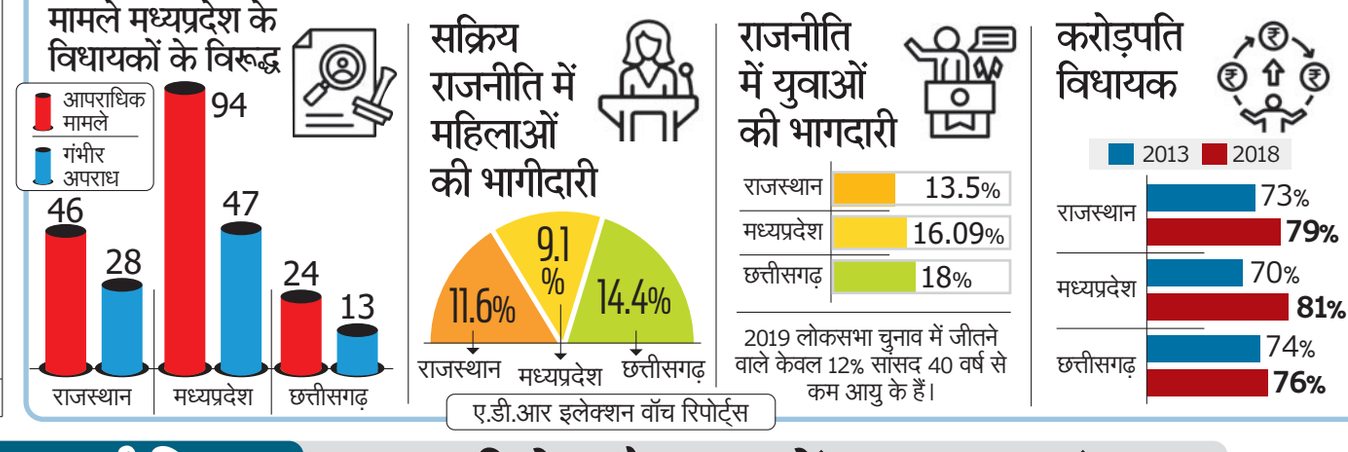

ए.डी.आर इलेक्शन वॉच रिपोर्ट्स

राजनीति को दीजिए नई दिशा — जनप्रहरी के तौर पर भरें अपना नामांकन

1. जनप्रहरी कौन बन सकते हैं?

अभियान का आशय बदलाव के नायकों से है। अभियान के माध्यम से हम साफ छवि वाले जन नायकों की तलाश कर रहें हैं। यदि आपको लगता है कि समाज और राजनीति की जो दशा है, उसमें बदलाव होना चाहिए, तो आप जनप्रहरी के तौर पर अपना नामांकन भर सकते हैं। अगर आपको राजनीतिक या सामाजिक कार्यों का थोड़ा भी अनुभव है, तो जनप्रहरी अभियान आपके लिए सुनहरा अवसर साबित हो सकता है।

2. क्या दावेदारी के लिए कोई न्यूनतम बाध्यता है?

आवेदकों को अनिवार्य रूप से राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों में मतदाता के रूप में पंजीकृत होना चाहिए। आवेदकों की आयु आवेदन शुरू होने की तिथि पर न्यूनतम 21 वर्ष होनी चाहिए। आवेदक के खिलाफ कोई गंभीर आपराधिक मामला दर्ज नहीं होना चाहिए। अभियान के अगले चरणों में अभ्यर्थियों से उनके द्वारा दी गई जानकारी को सत्यापित करने के लिए प्रमाण मांगा जा सकता है।

3. अभियान से जुड़ने के और भी तरीके हैं?

आप अभियान सहयोगी के रूप में आपके इलाके के जनप्रहरियों का सहयोग कर सकते हैं। कार्यक्रम आयोजन, सोशल मीडिया मैनेजमेंट में सहायता या फिर जन प्रेरक या सलाहकार के रूप में जुड़ सकते हैं। अभियान के अंतर्गत निरंतर तौर पर कई कार्यक्रम होंगे। आप इन कार्यक्रमों में अपनी सक्रिय भागीदारी से अभियान का समर्थन कर सकते हैं। साथ ही योग्य व्यक्तियों को जनप्रहरी बनने के लिए प्रेरित भी कर सकते है।

4. आवेदन भरने के बाद मुझे क्या करना होगा?

आवेदन प्रक्रिया पूरी करने के बाद आवेदनों की छंटनी की जाएगी। इसके बाद आवेदकों को समय-समय पर आगामी प्रक्रिया के बारे में सूचना दी जाती रहेगी। छंटनी के मापदंडों को विशेषज्ञों की सलाह से तय किया गया है। ये मापदंड जन नेतृत्व के लिए आवश्यक सभी गुणों की परख करने के लिए तय किए गए हैं। अभियान से जुड़ी जानकारी निरंतर पाने के लिए आप पत्रिका के सोशल मीडिया एकाउंट्स से जुड़ सकते हैं।

patrika foundation

ऐसे करें पंजीकरण

janprahari.patrika.com पर आवेदन पत्र भरकर अभियान के लिए पंजीकरण करें। आवेदन एक महीने तक खुले रहेंगे। ***अभियान के बारे में अधिक जानकारी के लिए इस वेब पोर्टल से जुड़े रहें।***

अभियान से जुड़ने और अधिक जानकारी के लिए क्यू आर कोड स्कैन करें

नॉलेज और स्किल पार्टनर

INDIAN SCHOOL OF DEMOCRACY
उत्कृष्ट भारत

ये बने बदलाव के नायक

सकारात्मक संदेश पहुंचाया

पत्रिका जिम्मेदार अखबार है व उनके अभियानों से सकारात्मक संदेश गया है। जनप्रतिनिधि को भी विकास कार्य कराने में हमेशा मदद मिली है। **सुरेश मोदी,** विधायक, नीमकाथाना, राजस्थान

यह मेरे जीवन का टर्निंग प्वाइंट

अभियान से मिले सुझावों को क्षेत्र में अमल करने के प्रयास लगातार जारी है। यह मेरे लिए जीवन का टर्निंग प्वाइंट था। **-सुनीता पटेल,** विधायक, गाडरवारा, मध्यप्रदेश

अभियान ने मुझे विधायक बनाया

पत्रिका चेंजमेकर अभियान ने ही मुझे विधायक बनाया। मैं ऋणी हूं अभियान का। अभियान ने ही राजनीति की सीढ़ियां चढ़ाई। **-जब्बरसिंह सांखला,** विधायक, आसींद, राजस्थान